सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-1 7 से 21 जनवरी, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) द्वारा लोकपाल बिल की कड़ी आलोचना

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने लोकसभा मे 22 दिसम्बर को पेश किये गये लोकपाल व लोकायुक्त बिल की कड़ी आलोचना करते हुए 26 दिसम्बर को निम्न बयान जारी किया। इसमें उन्होंने कहा कि कांग्रेस-नीत केन्द्र की यूपीए सरकार ने साफ दिखा दिया है कि यह इस अत्यन्त महत्वपूर्ण कानून के सार और शर्तों पर संसद के पिछले सत्र में दिये गये अपने आश्वासन से मुकर गई है। इससे यह भी साफ जाहिर है कि सरकार कोई स्वतंत्र स्वायत्त कारगर और ताकतवर लोकपाल संस्था कायम करने के खिलाफ है। इसीलिए कुछ ऐसे प्रावधान ले आई जिनसे सरकार द्वारा अपना प्रत्यक्ष भले ही न सही, मगर परोक्ष प्रभाव डालने की गुंजाइश इसमें छोड़ दी है और इस तरह सशक्त लोकपाल कानून के उद्देश्य को ही व्यर्थ कर दिया जा रहा है। इसलिए हम मांग करते हैं कि ऐसे सभी संदिग्ध प्रावधान पूरी तरह हटाये जायें। हम यह भी मांग करते हैं कि जो आश्वासन दिये गये थे उनका पूरी तरह से पालन करते हुए कानून बनना चाहिए और अन्य बातों के अलावा, प्रधानमंत्री और उनके कार्यालय को भी बिना किसी बंदिश के लोकपाल के दायरे में लाना चाहिए। सीबीआई को भी हर तरह के सरकारी नियंत्रण से बाहर लाया जाना चाहिए और इसे किसी लोकतांत्रिक ढंग से उभर कर आई संस्था स्वतंत्र ऑथोरिटी के तहत रखना चाहिए। संसद में सांसदों की तमाम गतिविधियों व आचरणों को लोकपाल के दायरे से बाहर रखने के विचार का भी हम बिल्कुल अनुमोदन नहीं करते हैं और यह मांग करते हैं कि उनकी तमाम गतिविधियों व आचरण को लोकपाल के दायरे में लाया जाये। 9 सदस्यीय लोकपाल गठित करने के प्रस्ताव का भी हम उतना ही विरोध करते हैं क्योंकि यह इस अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्था को सहज ढंग से चलाने योग्य नहीं रहने देगा और इसे अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में गैर कारगर बना देगा । इसके अलावा लोकपाल के सदस्यों के चयन में आरक्षण को शामिल करना केवल गैर जरूरी ही नहीं है बल्कि यह जांच के विचाराधीन मामलों से असम्बन्धित सवालों पर इस बॉडी में फूट व असहमति उभर कर सामने आने और इन पर व्यवस्था देने में देरी व हल्कापन लाने के खतरे से भी खाली नहीं है। इसका यह मतलब निकलता है कि सरकार प्रस्तावित लोकपाल को अन्दर से बहुत ही कमजोर बना देने की हर सम्भव कोशिश में है। सबसे अंतिम बात यह है कि हमारे देश जैसी पूंजीवादी व्यवस्था में जहां सभी संस्थाएं और पब्लिक बॉडियां गहरी जड़ जमाये बैठे भ्रष्टाचार की घुसपैठ के लिए आसानी से भेद्य हैं, वहां इन सब में चैक एण्ड बैलेंस की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए जो उपयुक्त लोकतांत्रिक ढंग से उभर कर आई किसी दूसरी बॉडी या फोरम के प्रति जवाबदेह हों। इसलिए लोकपाल को भी इससे सरोकार रखने वाले सभी लोगों और दावेदारों से चर्चा-बहस के जरिए उभर कर आई किसी उपयुक्त बॉडी के प्रति जवाबदेह होना चाहिए।

कॉमरेड घोष ने लोगों से आह्वान किया कि सरकार के ऐसे झांसे और दोमुंहेपन के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने के लिए आगे आयें और शक्तिहीन या पंगू कर देने वाले किसी भी तरह के प्रावधान से मुक्त एक सशक्त व कारगर लोकपाल कानून बनवाने के लिए एक सुसंगठित सतत ताकतवर जनआन्दोलन खड़ा करें। हम लोगों को यह भी याद दिला देना चाहते हैं कि महज सशक्त लोकपाल कानून बन जाना और इसके लागू होने की रिवाज के तौर पर घोषणा कर देना ही इस सड़े-गले पूंजीवादी ढांचे से जन्मे सर्वव्यापी भ्रष्टाचार को रोकने के लिए काफी नहीं है। देशव्यापी सचेत जनआन्दोलन का लगातार दबाव ही हमारे देश जैसे पूंजीवादी ढांचे में बढ़ते भ्रष्टाचार का असली प्रतिरोधक है।

वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया के महासचिव किम जोंग इल के देहांत पर एसयूसीआई(सी) ने गहरा शोक जताया

उत्तर कोरिया (डीपीआरके) की वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया के महासचिव, नेशनल डिफेंस कमिशन के चेयरमैन और कोरियन पिपल्स आर्मी के सुप्रीम कमाण्डर कॉमरेड किम जोंग इल के देहांत पर एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 20 दिसम्बर को जारी एक बयान में गहरी व्यथा-वेदना व्यक्त की। मानवता के घोर दुश्मन अमेरिकी साम्राज्यवाद की अगुआई में विश्व साम्राज्यवाद-पूंजीवाद की घिनौनी साजिशों और अनर्थकारी दुरभिसंधियों के खिलाफ उनकी बहादुराना लड़ाई और अमेरिकी साम्राज्यवादियों की उस पर तरेरी गई लाल आँखों व उसे दी गई युद्ध धमकियों की परवाह न करते हुए उत्तर कोरिया (डीपीआरके) में समाजवाद की डट कर रक्षा करने में और इस प्रकार पूरे विश्व में वैज्ञानिक समाजवाद की श्रेष्ठता बुलन्द रखने में उनकी उदाहरणीय भूमिका और क्रान्तिकारी साहसिकता को याद करते हुए कॉमरेड प्रभाष घोष ने कहा कि आज के एक ध्रुवीय विश्व में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उनके दृढ़ संकल्पित अनुशीलन की प्रक्रिया में उनके द्वारा हासिल किये गये अदम्य जज्बे का यह प्रदर्शन विश्व के सभी क्रान्तिकारियों के लिए सदा एक प्रेरणास्रोत के तौर पर रहेगा।

दिवंगत क्रान्तिकारी योद्धा और नेता को भावभीनी श्रद्धांजली देते हुए कॉमरेड घोष ने गहरे दुख और अपूरणीय क्षति की इस घड़ी में उत्तर कोरिया (डीपीआरके) की बहादुर जनता के साथ पूर्ण एकजुटता का इजहार किया और यह विश्वास जताया कि वे अपने दुख को दृढ़ संकल्प और फौलादी मजबूती में बदल डालेंगे तथा दिवंगत नेता के जीवन-संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए अपने देश में समाजवाद की रक्षा करने और उनके देश को विनाश के कगार पर धकेलने की तमाम घिनौनी साजिशों को नाकाम कर देंगे। अमेरिकी साम्राज्यवादियों और उनके पिठ्ठुओं की दादागिरी और गुण्डागर्दी के खिलाफ उत्तर कोरिया (डीपीआरके) की जनता की बहादुराना लड़ाई के प्रति सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) और भारत की मेहनतकश जनता के पूर्ण समर्थन की शपथ भी कॉमरेड घोष ने ली।

दिल्ली में 20 दिसम्बर को उत्तर कोरिया के दूतावास में कॉमरेड किम जोंग इल को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

जन जीवन की समस्याओं को लेकर रोषपूर्ण प्रदर्शन

वैशाली (बिहार) : कमरतोड़ महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी, मनरेगा योजनाओं में लूट-खसोट, खाद-बीज-डीजल-पेट्रोल की कीमतों में बेतहाशा बढ़ातरी, प्रखंड-अंचल-थाना में व्याप्त घूसखोरी, इंदिरा आवास योजना में घूसखोरी-घपलेबाजी, खेतिहर मजदूरों को साल भर काम की गारंटी सहित जन जीवन की समस्याओं से संबंधित 15 सूत्री मांगों को लेकर 8 दिसम्बर को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बैनर तले सैकड़ों किसान-मजदूर-महिलाओं ने वैशाली प्रखंड कार्यालय के समक्ष रोषपूर्ण प्रदर्शन किया। इससे पहले झंडों- बैनरों से सुसज्जित जुलूस वैशाली कचहरी बाजार से निकाला गया, जिसका नेतृत्व वैशाली लोकल कमिटी सचिव सह जिला कमिटी सदस्य कॉ. सिंगेश्वर भगत, कॉ. गणेशी पासवान, मकेश्वर पाठक, चन्द्रशेखर प्रसाद, बटेश्वर महतो, रघुवीर भगत, राम बाबू साहु, ममिना खातून, सिताबी देवी इत्यादि ने किया।

प्रदर्शन स्थल पर प्रदर्शनकारियों की सभा को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट), बिहार राज्य कमेटी के वरिष्ठ नेता कॉ. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि केन्द्र-राज्य की सरकारें पूंजीपतियों-मुनाफाखोरों, दलालों, माफियाओं को फायदा पहुंचाने वाली पूंजीवादी नीतियाँ लागू करती जा रही हैं, जिनके चलते ही आज किसान-मजदूरों की स्थिति दयनीय होती जा रही है। किसानों को अपने फसल के लाभकारी मूल्य से वंचित होना पड़ रहा है। खेतिहर मजदूरों को साल भर काम की गारंटी नहीं मिल पा रही है। जॉब कार्ड के नाम पर धांधली हो रही है। शिक्षा-स्वास्थ्य की सुविधाएं आम जनता से दूर होती जा रही हैं। बिहार की नीतीश सरकार जहां केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों को लागू करते हुए आम जनता को विकास का बाइस्कोप दिखा रही है वहीं यह सरकार न तो मजदूरों का पलायन रोक सकी और न ही भ्रष्टाचार पर काबू पा सकी, फिर भी विकास का ढिढ़ोरा पीट रही है।

ऐसी स्थिति में किसी भी सरकार से तरक्की की उम्मीद करना मूर्खता होगी। सारी समस्याओं की जड़ इस पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के खिलाफ जनआंदोलन तेज करना ही एकमात्र विकल्प है, इस समझदारी के आधार पर अपनी एकता को मजबूत करने का उपस्थित जन समूह से आह्वान किया। इनके अलावा सभा को राज्य कमेटी सदस्य कॉ. इन्द्रदेव राय, जिला सचिव कॉ. ललित कुमार घोष, जिला कमेटी सदस्य कॉ. राजेन्द्र शर्मा, कॉ. रामबाबू साह, प्रखंड सचिव सह जिला कमेटी सदस्य कॉ. सिंगेश्वर भगत ने संबोधित करते हुए केन्द्र-राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों की भर्त्सना की और जन संघर्ष को और तेज करने का आह्वान किया। अंत में 6 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने कॉ. सिंगेश्वर भगत के नेतृत्व में बीडीओ के प्रतिनिधि को 15 सूत्री माँग पत्र सौंपा।

आंगनवाड़ी कर्मचारियों के आंदोलन की ऐतिहासिक जीत

12 दिसम्बर, 2011 को एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध झारखंड आंगनवाड़ी कर्मचारी एसोसिएशन (जाका) के नेतृत्व में राज्य की हजारों आंगनवाड़ी कर्मियों ने अपनी कई वाजिब मांगों को लेकर मुख्यमंत्री आवास के समक्ष प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन के दौरान मुख्यत: मानदेय बढ़ाने की मांग पर सहमति जताने पर भी अन्य विषयों पर विस्तारित चर्चा के लिए 19 दिसम्बर की तिथि तय की गई थी। 19 दिसम्बर को जाका के 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने महिला व बाल कल्याण मंत्री श्रीमति विमला प्रधान से वार्ता की थी। वार्ता के उपरांत जो उपलब्धियां हुई वे निम्नलिखित हैं-

1. केन्द्र सरकार की ओर से 1 अप्रैल 2011 से आंगनवाड़ी सेविकाओं का मानदेय 1500 रु. से बढ़ाकर 3000 रु. और सहायिकाओं का 750 रु. से बढ़ाकर 1500 रु. कर दिया गया था। परंतु अन्य राज्यों में लागू हो जाने के बावजूद यह हमारे राज्य में लागू नहीं किया गया है। यह अविलम्ब लागू करने के लिए धनराशि निर्गत करने का ऑर्डर दे दिया गया। 2. राज्य सरकार की ओर से जो मानदेय दिया जाता है, वह अन्य राज्यों की तुलना में काफी कम है। इस विषय में वार्ता के दौरान मंत्री महोदया ने इसे बढ़ाने की मांग को जायज करार देते हुए इसी सत्र में मानदेय बढ़ाने के लिए कार्यवाई शुरू कर दी हैं। मंत्री महोदया के अनुसार यह राशि वर्तमान मिलने वाली राशि से कई गुणा ज्यादा होगी। 3. पिछला काला सर्कूलर जिसके तहत मुखिया व वार्ड पार्षदों को आंगनवाड़ी कर्मियों को हटाने का अधिकार दिया गया था, उसे निरस्त किया गया है। मुखिया व वार्ड पार्षद आंगनवाड़ी केन्द्रों के सुचारू संचालन में सहायता करेंगे परंतु किसी को हटाने का अधिकार उन्हें नहीं होगा। 4. सभी आंगनवाड़ी कर्मियों के लिए साईकल व ड्रेस के लिए पैसा भेजने का आदेश दे दिया गया। 5. सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों में सरकारी भवन होगा, इसके लिए भी आदेश दे दिया गया। 6. सेविकाओं को वरीयता के आधार पर पदोन्नति दी जायेगी। इसकी उम्र सीमा 40 साल करने का प्रावधान है, प्रतिनिधिमंडल की मांग पर इसे 45 साल करने पर विचार किया जा रहा है। 7. पोषाहार के लिए मार्च महीने तक की राशि दिसम्बर में ही निर्गत कर दी जायेगी। भविष्य में यह राशि अग्रिम ही भुगतान कर दी जायेगी जिससे समस्याएं उत्पन्न न हों।

संगठन की ओर से मंत्री महोदया को हार्दिक धन्यवाद दिया गया है और साथ ही इस जीत को ऐतिहासिक करार देते हुए 12 दिसम्बर की रैली में शामिल हुई हजारों आंगनवाड़ी कर्मियों को बधाई देते हुए संगठन के अध्यक्ष सुमित राय व महासचिव पुष्पा महतो ने सेविकाओं को चौकन्ना रहने और संगठन को मजबूत बनाने की अपील की है। चर्चा के दौरान उपरोक्त विन्दुओं पर जो सहमति बनी है, उसे यदि कार्यान्वित नहीं किया गया तो आंगनवाड़ी कर्मी फिर से सड़क पर उतरने के लिए बाध्य होंगी।

किसानों की ज्वलन्त समस्याओं पर किसान पंचायत

पंचायत को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड अनूप सिंह

रोहतक (हरियाणा) : मण्डियों में किसानों की हो रही लूट के खिलाफ ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन के बुलावे पर 16 दिसम्बर को रोहतक के मानसरोवर पार्क में हरियाणा भर से आये किसानों की एक पंचायत हुई जिसकी अध्यक्षता संगठन के राज्य अध्यक्ष कॉमरेड अनूप सिंह की। पंचायत में अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि किसानों को कृषि उपज के वाजिब दाम मिलने तो दूर रहे, उनके लागत मूल्य भी नहीं मिल रहे हैं। राज्य में हुड्डा-नीत कांग्रेस सरकार किसानों को तबाह कर रही है। सरकार पूंजीपतियों की ताबेदार बनी हुई है। बासमती धान, कपास, आलू व बाजरे को मण्डियों में लूटा जा रहा है। संगठन के राज्य सचिव कॉमरेड विजय कुमार ने कहा कि डीएपी खाद, बीज, कीटनाशक, डीजल, बिजली आदि महंगे हो जाने से खेती में लागत खर्च काफी बढ़ गया है जिससे किसानों की दुर्दशा हो रही है। बलबीर सिंह ने कहा कि बिजली-पानी के संकट के चलते भी किसान परेशान हैं। यूरिया खाद समय पर नहीं मिल रही। बाजरे की खरीद समर्थन मूल्य पर नहीं हुई। बासमती धान 15 साल पहले 2000 रुपये प्रति क्विंटल बिका था लेकिन आज इसे 1400 रुपये प्रति क्विंटल में भी कोई नहीं पूछ रहा है। किसानों को बहुत घाटा हुआ है। इससे किसान कर्जवान होकर आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। हुड्डा की कांग्रेस सरकार किसानों की कोई सुध लेने की बजाए उन्हें तबाह करने पर तुली हुई है। कृषि भूमि को किसानों से कोड़ियों के भाव अधिग्रहण करके प्राइवेट कम्पनियों को दे रही है। सरकार की नीतियां किसान-विरोधी हैं।

इनके अलावा सतबीर चहल, जयनारायण, बाबूराम, रामकुमार, नंदलाल, सूरत सिंह, जिले सिंह, रोहतास, करतार सिंह, मास्टर जयकर्ण, करतार सिंह मलिक, बलबीर राणा, सुरेश अहलावत व हंस राज राणा ने भी किसान पंचायत में अपने विचार रखे। किसान पंचायत में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में निम्न मांगें उठायी गई : समर्थन मूल्य प्रति क्विंटल बासमती धान का 3000 रुपये, कपास का 6500 रुपये, गेहूं का 1500 रुपये दिया जाये, डीएपी खाद व डीजल के दाम आधे किये जायें, कृषि भूमि का अधिग्रहण बंद किया जाये, किसानों के कर्जे खत्म किये जायें, खाद, बीज, कीटनाशक आदि सस्ते दिये जायें, खेती के लिए कम से कम 12 घण्टे बिजली दी जाये, नहरों का पानी टेल तक पहुंचाया जाये, ग्रामीण मजदूरों को पूरे साल काम दिया जाये और दैनिक मजदूरी का रेट 300 रुपये किया जाये। अंत में पंचायत के माध्यम से किसान नेताओं ने आह्वान किया कि किसान-खेत मजदूर अपने हितों की रक्षा के लिए आगे आयें और अपनी मांगों को मनवाने के लिए एकजुट होकर जोरदार संयुक्त आन्दोलन गठित करें।

ढाका में बांग्लादेश के समाजवादी दल (बासद) की मेजबानी में आईएपीएससीसी के तीसरे अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी सम्मेलन ने किया उत्साह का संचार

ढाका, बांग्लादेश में 27 से 29 नवम्बर तक हुए इन्टरनेशनल एंटी-इम्पीरियलिस्ट एण्ड पिपल्स सोलिडेरिटी कॉऑर्डिनेटिंग कमेटी (आईएपीएससीसी) के तीसरे अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी सम्मेलन ने यहां की जनता में जबरदस्त उत्साह का संचार किया। इसकी मेजबानी बांग्लादेश के समाजवादी दल (बासद) ने की। इस अनूठे कार्यक्रम में लगभग 20 देशों से आये प्रतिनिधियों - साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में लगे हुए विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने शिरकत की। उन्होंने एक-दूसरे से सीखने और दुनिया भर में साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को मजबूत करने व आगे बढ़ाने के भावी ठोस कदम व कार्यक्रम की रूपरेखा तय करने के लिए संघर्ष के अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया। बांग्लादेश के अवाम ने , जो अमेरिकी साम्राज्यवाद और भारतीय साम्राज्यवाद के खतरों से रूबरू हैं, इस सम्मेलन के आह्वान का जबरदस्त प्रत्युत्तर दिया। वे तहेदिल से आर्थिक समेत हर तरह की सहायता व समर्थन देते हुए दुनिया के इतने सारे देशों से आये प्रतिनिधियों व पर्यवेक्षकों वाले इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी करने के इस बहुत बड़े काम को कामयाब करने के लिए आगे आये।

खुला अधिवेशन

महानगर नाट्यमंच के पास मैदान में 27 नवम्बर को हुए खुले अधिवेशन में 15000 के आसपास लोग शामिल हुए। उनमें इतना उत्साह था कि सबके लिए मैदान में जगह नहीं मिली तो वे आसपास जहां भी जगह मिली वहीं पूरे समय डटे रहे। इसके बाद जब वहां से जुलूस निकला जिसमें विदेशी प्रतिनिधि शामिल थे, ढाका में जुलूस में साथ चले। जहां से भी गुजरा वहीं सड़क के दोनों तरफ खड़े लोगों की तरफ से जुलूस की वाह क्या खूब अगवानी की गई!

खुले अधिवेशन की अध्यक्षता बासद के महासचिव व आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल के सदस्य खालेकुज्जामान ने की। उन्होंने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए मंच पर उनका परिचय कराया। उनमें शामिल थे आईएपीएससीसी के सदस्य व बासद की केन्द्रीय कमेटी सदस्य मुबिनुल हैदर चौधरी; आईएपीएससीसी के महासचिव व एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी; आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल सदस्य व एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रणजीत धर; नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री व यूसीपीएन माओवादी की स्टैण्डिंग कमेटी के सदस्य कृष्ण बहादुर महारा; नेपाल की यूसीपीएन माओवादी के पोलिट ब्यूरो सदस्य व आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल सदस्य नीनू चापागेन; नेपाल की यूसीपीएन माओवादी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य सुरेश कुमार आलि मगार; डीपीआरके (उत्तर कोरिया) की अफ्रो-एशियन सोलिडेरिटी के लिए कोरियाई कमेटी के महासचिव रि सोंग; इसी कमेटी के स्टैण्डिंग कमेटी सदस्य कांग मुन रियोल; अमेरिका की वर्कर्स वर्ल्ड पार्टी व आईएपीएससीसी की सचिवमण्डल सदस्या सारा फलाउण्डर्स; लेबनान से आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल सदस्य मोहम्मद कासेम; फिलीस्तीन मुक्ति मोर्चे के अहमद जिब्रील; पाकिस्तानी पीस एण्ड सोलिडेरिटी काउन्सिल के मुहम्मद कासिम; श्रीलंका की न्यू डेमोक्रेटिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के अंतर्राष्ट्रीय संगठक व आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल सदस्य इलियाथाम्बी थाम्बिया; फ्रांस की न्यू स्टालिन एसोसिएशन के अध्यक्ष व डेमोक्राइट के सम्पादक और आईएपीएससीसी के सचिवमण्डल सदस्य अलैक्जैण्डर मुबारिस; कनाडा से नोर्थ स्टार कम्पास के अर्तुसो एन्टोनियो; अमेरिका के इन्टरनेशनल एक्शन सेन्टर की हीथर कोट्टिन; तुर्की से एमएलसीपी की लेना; जोर्डन की कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य खालेद नजी ओ हैद्दाद्दीन; जोर्डन की कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य हनी हैद्दाद्दीन; इन्टरनेशनल लीग ऑफ पिपल्स स्ट्रगल के उपाध्यक्ष बिल डोरेस; ईरान सोलिडेरिटी के सिमिन रोयनियन; मिस्र की कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य मोयताज अल हेफ्नवी; मोरिशस की कम्युनिस्ट पार्टी के रामसरण लोहमस; मोरोक्को की एग्रोनामी के संगठन की तरफ से डा. एद्दबरह अब्दुस्सलाम; सुडान का पिपल्स फ्रेण्डशिप की इन्टरनेशनल काउन्सिल के अहमद अब्दुल रहमान; भारत के अखिल भारतीय साम्राज्यवाद-विरोधी मंच के महासचिव ध्रुव मुखर्जी।

खुले अधिवेशन का उद्घाटन आईएपीएससीसी के अध्यक्ष रामसे क्लार्क का संदेश पढ़कर सुनाये जाने के साथ हुआ। उनके संक्षिप्त लेकिन प्रेरणादायक संदेश में अफगानिस्तरन, इराक पर अमेरिकी हमले, लिबिया के लोगों को अमेरिका-नीत नाटो फौजों द्वारा बेरहमी से रौंद डालने, सीरिया व ईरान को निशाना बनाने को रेखांकित किया गया। इस स्थान-काल का महत्व दर्शाते हुए उन्होंने कहा : ''पूर्वानुमान लगाये जाने लायक भविष्य में सबसे बड़ा साम्राज्यवादी टकराव बांग्लादेश के ठीक बगल में होना है। यहीं से अमेरिका दक्षिणपूर्वी एशिया को नियंत्रित करने और चीन को घेरने और खुद को चीनी सीमाक्षेत्र पर काबिज करने की फिराक में है।।....'' उन्होंने बांग्लादेश जैसे देशों में अमेरिकी साम्राज्यवादी शोषण की त्रासदी पर प्रकाश डाला और साम्राज्यवादी हमले को रोकने पर बल दिया। ''इसे रोकने के लिए निर्भीक कार्रवाई करने की जरूरत है।...मुझे आज आपके साथ मिल कर इसकी योजना बनानी थी। एक स्वास्थ्य संकट ने मुझे इससे रोक दिया। लेकिन मैं भावना में, कल और इसके बाद के संघर्ष में आपके साथ रहूंगा।''

नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री व यूनाइटेड कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल(माओवादी) के चेयरमैन कॉमरेड पुष्प कमल दहल (प्रचण्ड) को भी कार्यक्रम में आना था लेकिन उनके देश में अचानक राजनैतिक संकट पैदा कर देने वाले घटनाक्रम की वजह से वे नहीं आ सके। उनके द्वारा भेजा गया एकजुटता संदेश पढ़कर सुनाया गया जिसमें उन्होंने सम्मेलन में शामिल होने की प्रबल इच्छा के बावजूद हालात से मजबूर होकर उनके गैर हाजिर होने के बारे में अफसोस जाहिर करते हुए कहा : ''भावी क्रान्ति का मार्गदर्शन करने के लिए प्रस्ताव पारित करने में किसान-मजदूरों, शोषित-पीड़ित मेहनतकश लोगों की मुक्ति को मद्देनजर रखते हुए क्रान्ति की मौजूदा समस्याओं और मुद्दों पर जीवन्त चर्चा-बहस करने का आपसे मैं आग्रह करता हूँ। हमारी पार्टी यूनाइटेड कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल(माओवादी शोषित-पीड़ित मेहनतकश लोगों की आवाज बुलन्द करने में हमेशा उनके साथ है। आइये, हर तरह के शोषण और सामन्तवाद व साम्राज्यवाद के भी खिलाफ हम सब एक हो जायें।''

खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए रि सोंग ने कहा : मैं इस महत्वपूर्ण सभा में आपसे मिलकर बहुत खुश हूँ क्योंकि हम साम्राज्यवादी ताकतों की उद्दण्डता व मनमानी, युद्ध व आक्रमण के खिलाफ एक ही संघर्ष में हैं। दुनियाभर में अमेरिका-नीत साम्राज्यवादी ताकतों के हमलों, धमकियों और रणकौशलों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि कोरिया के लोग आधी सदी से भी ज्यादा अर्से से देश के बंटवारे की त्रासदी झेल रहे हैं और साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा उन्हें शांति से एक भी दिन नहीं जीने देने की दी जा रही परमाणु युद्ध की धमकियों से रूबरू हैं। अमेरिका दक्षिण कोरिया में सैकड़ों हजार अमेरिकी फौज की टुकड़ियों को रखे हुए है, तनाव बढ़ाने के लिए परमाणु अस्त्र-शस्त्रों को भी वहां घुसा रहा है और शांति व सुरक्षा को खतरे में डालते हुए वहां संयुक्त सैन्य अभ्यास चला रहा है। यह हमारी समाजवादी व्यवस्था को सामरिक व आर्थिक तौर पर विघटित करने के लिए नाकेबंदी करने, अलग-थलग कर देने और दमघोंटने वाली कार्रवाइयों को तेज कर रहा है। उन्होंने जोर देते हुए कहा : ''हमारे नेता (अब दिवंगत) किम जोंग इल की सोनगुन नीति अमेरिका के आये दिन बढ़ते जा रहे कदमों को नाकाम करने, हमारे देश के जनसाधारण को केन्द्र करके अपने ढंग के समाजवाद की रक्षा करने और कोरियाई प्रायद्वीप की शांति व सुरक्षा को सुनिश्चित करने की पक्की गारण्टी है।'' उन्होंने यह भी कहा कि इस नीति के बल पर अगर हम अमेरिकी आक्रमण की धमकी का मुकाबला करने में विफल हुए तो युद्ध एक तरह से छिड़ ही चुका है और इस प्रकार न केवल कोरियाई प्रायद्वीप बल्कि उत्तर-पूर्वी एशिया के साथ-साथ दुनिया को भी युद्ध की लपटों में खींच लाया जाएगा।

कॉमरेड कृष्ण बहादुर महारा ने कहा : हम यहां क्रान्तिकारियों और प्रगतिशील लोगों की जमायत में हैं जो इस दुनिया को बदलना और एक न्यायसंगत, समतामूलक व शोषणमुक्त सुरक्षित दुनिया कायम करना चाहते हैं।..हम नेपाल में शांति कायम करने की प्रक्रिया में हैं लेकिन यह शांति कुछ मुट्ठीभर अभिजात्य वर्ग वालों, दक्षिणपंथियों और प्रतिक्रियावादियों के लिए नहीं बल्कि बहुसंख्यक लोगों के लिए है। हमने अच्छी तरह समझ लिया है कि स्थाई शांति के जन क्रान्ति और लोगों की सक्रिय भागेदारी से ही कायम की जा सकती है।...हमने नेपाल में साम्राज्यवादियों के पिछलग्गुओं के खिलाफ कुछ लड़ाइयां जीत ली हैं लेकिन अभी पूरी लड़ाई नहीं जीती है। हम नेपाली क्रान्ति के भविष्य को लेकर गम्भीर चर्चा-बहस में रत हैं।... हमारी पार्टी क्रान्ति का नेतृत्व करती आई है और लोगों के दुश्मनों की लोगों के प्रति नीति व रुख के मुताबिक इसके रूप को बदलने का संघर्ष करती आई है।... वर्तमान में हम शान्ति और संविधान का प्रारूप तैयार करने की प्रक्रिया में हैं। शांति और संविधान जन भावना के मुताबिक हो या बुर्जुआ वर्ग व प्रतिक्रियावादियों के हित के मुताबिक हो यह वर्तमान में विचारणीय विषय है और दोनों के बीच टकराव नेपाली राजनीति का लब्बोलुआब है।...

नेपाली क्रान्ति की सहायता व समर्थन करने और दुनिया को बदलने की अपील सबसे करते हुए उन्होंने आग्रह किया : ''आइये, हम सब आगे आयें, दुनियाभर के साम्राज्यवादियों व प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ लामबंद हों और संघर्ष करें, सृजनात्मक ढंग से संघर्ष पर अमल करें और मजबूती के साथ इसे आगे बढ़ायें।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने इस तीन दिवसीय सम्मेलन की मेजबानी करने के लिए बांग्लादश के समाजतांत्रिक दल(बासद) को हार्दिक बधाई देते हुए कहा : आईएपीएससीसी और मेरी अपनी तरफ से मैं सभी स्वयंसेवकों को उनके तहेदिल से इस काम को सरअंजाम देने और बासद को हार्दिक धन्यवाद व बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने इस सम्मेलन को कामयाब करने के महीनों अथक परिश्रम किया है। आईएपीएससीसी के गठन का इतिहास संक्षेप में रखते हुए उन्होंने कहा : आप जानते हैं कि

(शेष पृष्ठ 6 पर)

9वां समस्त उड़ीसा छात्र सम्मेलन

भुवनेश्वर(उड़ीसा) : स्कूल स्तर पर पास-फेल नहीं की प्रथा, स्कूलों, कॉलेजों व यूनिवर्सिटियों में स्टाफ व सुविधाओं की कमी, शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण, फीस वृद्धि और निजी व विदेशी विश्वविद्यालय बिल के खिलाफ और ब्लॉक ग्रांट सिस्टम के उन्मूलन की मांग को लेकर ऑल इण्डिया डीएसओ, उड़ीसा राज्य कमेटी की ओर से 18 दिसम्बर को यहां ओएसएसए भवन में 9वां समस्त उड़ीसा छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। संगठन की ऑल इण्डिया कमेटी के अध्यक्ष कॉमरेड एमएन श्रीराम द्वारा संगठन का झण्डा फहराये जाने के साथ ही सम्मेलन की कार्यवाही शुरू हुई। इसके बाद एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की उड़ीसा राज्य कमेटी के सचिव कॉ. धुर्जटी दास, पार्टी की राज्य कमेटी सदस्या कॉ. छवि मोहन्ती और एआईडीएसओ के राज्य स्तरीय नेताओं द्वारा शहीद वेदी पर माल्यार्पण किया गया। वहां लगाई गई चित्र व उद्धरण प्रदर्शनी का उद्घाटन संगठन की ऑल इण्डिया कमेटी के कोषाध्यक्ष कॉ. नवेन्दु पाल द्वारा किया गया।

सम्मेलन की कार्यवाही के संचालन के लिए एआईडीएसओ उड़ीसा राज्य अध्यक्ष कॉमरेड अशोक मिश्रा, मनोज महंत, विश्व रंजन सामल को लेकर एक अध्यक्षमण्डल गठित किया गया। कॉ. एमएन श्रीराम ने उद्घाटन भाषण दिया। कॉ. शिवाशीष ने सम्मेलन का मुख्य प्रस्ताव पेश किया जिस पर हुई चर्चा में विभिन्न स्कूल-कॉलेजों के 28 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगठन के सचिवमण्डल सदस्यों, कॉमरेड्स सिद्धार्थ रथ और सोमनाथ बेहरा द्वारा दो प्रस्ताव और पेश किये गये। इनमें से पहला ब्लॉक ग्रांट सिस्टम खत्म करने बारे में और दूसरा छात्राओं पर बढ़ते अत्याचारों को रोकने के बारे में था।एआईडीएसओ के राज्य सचिव कॉमरेड ब्रज बन्धु साहु ने सांगठनिक रिपोर्ट पेश की। सम्मेलन में भाग लेने वालों ने इसमें कई संयोजन किये।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में एआईडीएसओ के महासचिव कॉमरेड सौरभ मुखर्जी ने शिक्षा के संकोचन व व्यापारीकरण की साजिश का पर्दाफास करते हुए कहा कि आज के शासक वर्ग का असली मकसद है युवा पीढ़ी की नैतिक रीढ़ को तोड़ डालना और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रखना। सम्मेलन के मुख्य वक्ता कॉमरेड धुर्जटी दास ने चरित्र निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं को बारीकी से जानने-समझने और अपनाते हुए राज्यभर में अपने संगठन को बनाने पर बल दिया। एआईडीएसओ की 139 सदस्यीय एक नई स्टेट काउंसिल का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष अक्षय दास, उपाध्यक्ष सुभाष नायक व गणेश त्रिपाठी, सचिव शिवाशीष पहराज और कोषाध्यक्ष शाश्वत साहु चुने गये। सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए।

परीक्षाओं के बावजूद सम्मेलन में राज्य के कोने-कोने से आये 800 प्रतिनिधियों ने शिरकत की। सम्मेलन ने खासकर छात्रों पर और आम तौर पर अभिभावकों व शिक्षकों पर अमिट छाप छोड़ी। कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान के साथ सम्मेलन की कार्यवाही का समापन हुआ।

देशभर में मनाया गया ए.आई.डी.एस.ओ. स्थापना दिवस

पंजाब: 28 दिसम्बर को ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स आर्गेनाईजेशन (एआईडीएसओ) के 57वें स्थापना दिवस के अवसर पर राजकीय बाल विद्यालय बुडलाढ़ा, जिला मानसा, पंजाब के हॉल में छात्र सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता कॉ. सरवरण सिंह ने की। सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पंजाब राज्य सचिव कॉ. अमेन्द्रपाल सिंह व मुख्य अतिथि एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. भास्कारानन्द थे। उन्होंने शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार छात्र आन्दोलन खड़ा करने का आह्वान किया। सभा को कॉ. कुलविन्दर व जोद्धा ने भी सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सत्य की खोज करना और समाज के विकास में उसको लगाना है। लेकिन आज हमारे देश की सरकारों द्वारा सबसे ज्यादा हमला शिक्षा के ऊपर किया जा रहा है। शिक्षा क्षेत्र को पूरी तरह से व्यापार में बदल दिया गया है। सभा का संचालन कॉ. लखबीर ने किया।

बुराड़ी (दिल्ली): एआईडीएसओ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 29 दिसम्बर को दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों ने हिस्सा लिया। छात्रों की सभा को कॉ. राहुल सरकार ने सम्बोधित किया। बाद में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस मौके पर एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. भास्कर ने बच्चों के उत्साहवर्धन के लिए बात रखी। कार्यक्रम का संचालन कॉ. प्रियंका ने किया।

गुलाबी बाग (दिल्ली): 31 दिसम्बर को स्कूली छात्र-छात्राओं की सभा करके एआईडीएसओ स्थापना दिवस मनाया गया। सभा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की स्थानीय इंचार्ज कॉ. ऋतु कौशिक, एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रशांत कुमार ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम में संगठन की दिल्ली राज्य काउन्सिल सदस्या कॉ. सोनी व कॉ. पूजा ने एक एक गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन संगठन के दिल्ली राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉ. कृष्णेन्दु मुखर्जी ने किया।

गुना (म.प्र.): 28 दिसम्बर के दिन संगठन के स्थानीय कार्यालय पर प्रात: 7 बजे ध्वजारोहण के बाद संगठन के जिलाध्यक्ष कॉ. सचिन जैन ने छात्रों को सम्बोधित किया। इसके बाद गुना शहर के प्रमुख चौराहों पर महापुरुषों की उद्धरण प्रदर्शनी व बुक-स्टॉल लगायी गई। जयस्तम्भ चौराहे पर बालक हायर सेकेण्डरी क्र.2, सुगन चौराहे पर एमएलबी स्कूल कमेटी, हनुमान चौराहे पर कॉलेज कमेटी एवं कैर चौराहे पर कैण्ट जोन कमेटी द्वारा व आरोन समेत जिले भर में विभिन्न कार्यक्रम लिये गये।

जे.पी. नगर (उ.प्र.): ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. के 57वें स्थापना दिवस केअवसर पर 1जनवरी को अखबन्दपुर (जोया), में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम व छात्रों की सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल-कॉलेजों के सैकड़ों छात्र-छात्राओं व अभिभावकों ने हिस्सा लिया। सभा की अध्यक्षता कॉ. ऋतु चौधरी ने की। एआईडीएसओ की अखिल भारतीय सचिव मण्डल सदस्य कॉ. भास्करानन्द सभा के मुख्य अतिथि थे।

सभा को सम्बोधित करते हुए भास्करानन्द ने कहा कि ज्ञानार्जन व निमार्ण हमारे पूर्वजों व मनीषियों ने सामूहिक तौर पर प्रकृति से जूझते हुए किया। लेकिन सरकार द्वारा पूँजीपतियों को शिक्षा के जरिए मुनाफा कमाने के लिए खुली छूट दी जा रही है। शिक्षा महंगी व उसका स्तर नीचे गिर रहा है। इसके खिलाफ छात्रों, अध्यापकों व अभिभावकों को एकजुट होकर आन्दोलन करना होगा और छात्रों को एआईडीएसओ को मजबूत बनाना होगा।

सभा को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जे.पी. नगर के जिला सचिव कॉ. शील कुमार, आंगनबाड़ी नेत्री कॉ. सोमवती, एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड्स आसिफ, प्रशांत, दीक्षित, राहुल, नेहा एवं चंचल ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन कॉ. नीरज कुमार ने किया। छात्र-छात्राओं द्वारा क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किए गए।

जे.पी.नगर में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. भस्करानंद

स्मैक का विरोध किया

गुना (म.प्र.): शहर में फैल रहे स्मैक (टिकिट) के अवैध व्यापार के विरोध में अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) ने 25 दिसम्बर को स्थानीय हनुमान चौराहे, सुगन चौराहे, रपटा पर पोस्टकार्ड अभियान चला कर जिला प्रशासन से स्मैक का अवैध धंधा रोकने व इसके कारोबारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने की माँग की। संगठन की जिला सचिव श्रीमति संगीता आर.बी. ने बताया कि गुना जिले में स्मैक का अवैध धंधा फल-फूल रहा है जो कई घरों के चिरागों को अपनी चपेट में लेता जा रहा है। इसके सेवन करने वाले न सिर्फ इसके आदि हो जाते हैं बल्कि वे अपनी इस तलब को पूरी करने के लिए चोरी, डकैती, हत्या जैसे अपराध भी करने लगते हैं जिससे उनका तो भविष्य बर्बाद होता ही है, साथ ही उनके परिवार को भी मानसिक तथा आर्थिक रूप से बहुत हानि उठानी पड़ती है। एआईएमएसएस की कार्यकर्ताओं ने तीन दिन शहर में जगह-जगह जनता से जिलाधीश के नाम पोस्टकार्ड लिखने की अपील की जिनमें उनसे इस स्मैक का जहरीला कारोबार बन्द करवाने की माँग की जाये।

काकोरी के शहीदों की याद में सभाएं

पिलानी (राजस्थान) : काकोरी कांड के शहीदों --रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को भावभीनी श्रद्धांजली देते हुए यहां मुख्य बाजार पार्क में 18 दिसम्बर को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। पार्क में चित्र व उद्धरण प्रदर्शनी भी लगाई गई। रिसाल सिंह के द्वारा शहीदों के चित्रों पर माल्यार्पण के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्यामसुन्दर दिनोदिया ने की। मुख्य वक्ता कॉमरेड शंकर दहिया ने बढ़ते भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, अश्लीलता आदि बुराइयों के खिलाफ सबको एकजुट होकर उच्च नीति-नैतिकता के आधार पर जोरदार जन आन्दोलन खड़ा करने की अपील की। अन्य वक्ताओं में कॉमरेड्स रविकांत, सुभाष सुजडोला, सामाजिक कार्यकर्ता भजनलाल आदि थे।

कार्यक्रम में डीएसओ की ओर से कॉ. दीपक और डीवाईओ की ओर से कॉ. राजेन्द्र सिहाग, विष्णु वर्मा, प्रताप आलड़िया, विकास माखरिया, मनोज वर्मा, दिनेश पाराशर, दिलीप भूपेश, कपिल, संजय गुप्ता आदि शामिल रहे। काम्सोमोल के बच्चों भुवनेश्वर पाराशर, सचिन, निकिता ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन रविकांत ने किया। अध्यक्षीय भाषण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

फलोदी (राजस्थान) : ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. फलोदी के तत्वावधान में काकोरी के अमर शहीदों, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, ठाकुर रोशनसिंह व राजेन्द्र लाहिड़ी की याद में 18 दिसम्बर को स्थानीय नगरपालिका के दीनदयाल उद्यान में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष राजमल शर्मा व तहसील अध्यक्ष श्रवण विश्नोई की अध्यक्षता में स्मृति सभा का आयोजन कर श्रद्धा सुमन अर्पित कर समारोह आयोजित किया गया।

मुख्य व्यक्ता राजमल शर्मा ने सैकड़ों उपस्थित छात्र-छात्राओं व युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आजादी आंदोलन में गैर समझौतावादी धारा के इन युवा क्रांतिकारियों ने अपना यौवन देश पर कुर्बान कर देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे को गले लगाया। उनके त्याग व बलिदान से ओत-प्रोत संघर्षमय जीवन-आदर्श को हमें अपने जीवन में आत्मसात करना समय की सबसे बड़ी मांग है। इन महान क्रांतिकारियों ने शोषण विहीन समतामूलक समाज के निर्माण का सपना संजोया था जहां कोई शिक्षा, इलाज व रोटी तथा रोजगार से वंचित न हो तथा पूँजी के बल पर एक इन्सान दूसरे इन्सान पर शोषण न कर सकें। ऐसे महान क्रातिकारियों का सपना आज भी अधूरा है।

स्मृति सभा को शहीद मनीषी यादगार कमेटी के संयोजक छाजूराम रावत ने कहा कि महान शहीदों की कुर्बानियां हमें जुल्म व अत्याचार के खिलाफ उठ खड़े होने के लिए ललकार रही है। हमें नीति-नैतिकता व मर्यादित जीवन अपनाकर ऐसे शहीदों के सपने को साकार करने के समतामूलक, शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए आगे आकर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभानी होगी। स्मृति सभा को समस्तदीन मंगलिया, अर्जुन चौधरी, जगदीश जयपाल, सुरेश मेघवाल, सी.आर.मेहरा, मुस्ताक शाह, रमेश देवड़ा ने संबोधित किया तथा संजय शर्मा ने क्रांतिकारी कविता प्रस्तुत की। स्मृति सभा का संचालन स्मृति सभा संयोजक संगीता रावत ने किया। डी.एस.ओ. कमेटी के श्रवण विश्नोई ने आभार प्रकट किया तथा एआईडीएसओ के विचार व उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि यह संगठन स्वतंत्रता संग्राम की गैर समझौतावादी धारा के क्रांतिकारी शहीदों के आदर्श व उनके जीवन-संघर्ष को युवाओं के बीच ले जाने का महत्वपूर्ण सामाजिक व ऐतिहासिक कार्य कर रहा है।

सभा को संबोधित करते हुए कॉमरेड राजमल शर्मा

महाराष्ट्र में यवतमाल में युवा कैम्प

महाराष्ट्र में यवतमाल में सावित्री बाई फूले सोशल वर्क कॉलेज में 18 दिसम्बर को ऑल इण्डिया डीवाईओ द्वारा यवतमाल और वार्धा का युवा कैम्प लगाया गया। इसमें डीवाईओ के सदस्यों व आम नौजवानों ने अच्छी-खासी संख्या में भाग लिया। इसका उद्घाटन संगठन की महासचिव कॉमरेड प्रतिभा नायक ने किया। महान स्वतंत्रता सेनानियों अश्फाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी व रोशन सिंह के बलिदान दिवस पर शहीद वेदी पर माल्यार्पण के साथ इसकी शुरूआत हुई। कॉमरेड प्रमोद काम्बले ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कैम्प में बेरोजगारी पर परिचर्चा के साथ-साथ हिंदी व मराठी में सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल-कूद भी हुए। पूरे समय कैम्प का संचालन व इसकी अध्यक्षता कॉमरेड संगीत राव बारी ने किया।

अंत में एआईडीवाई की एक मजबूत 11 सदस्यीय यवतमाल-वार्धा कमेटी गठित की गई।

शहीद उधम सिंह की जयन्ती पर जनसभा

जनसभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड रामफल

कुरूक्षेत्र (हरियाणा) : स्वतंत्रता आन्दोलन के महान क्रान्तिकारी योद्धा अमर शहीद उधम सिंह की जयन्ति ऑल इण्डिया कृषक खेतमजदूर संगठन तथा डेमोक्रटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन द्वारा कुरूक्षेत्र के छोटूराम पार्क में 26 दिसम्बर को यथोचित सम्मान के साथ मनायी गई। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता कृषक खेतमजदूर संगठन के जिला अध्यक्ष कॉमरेड बाबूराम ने की। सभा की शुरूआत में एसयूसीआई(सी) के जिला सचिव कॉमरेड रोशनलाल और किसानों व नौजवानों के नेताओं सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने शहीद उधम सिंह के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

डी.वाई.ओ. के पूर्व राज्याध्यक्ष, एसयूसीआई(सी) के राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल ने मुख्य वक्ता के तौर पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद-विरोधी देश के मुक्ति संग्राम में अनेक महान सपूतों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। शहीद उधम सिंह जैसे आजादी आन्दोलन की गैर समझौतावादी धारा के क्रान्तिकारियों ने देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के फन्दे को गले लगाया था। उनका अदम्य साहस, असीम त्याग व आत्म बलिदान और जीवन-संघर्ष नौजवानों के लिए सदा प्रेरणा स्रोत रहेगा। इन देशभक्तों ने एक ऐसे समाज के निर्माण का सपना संजोया था जिसमें इन्सान के द्वारा इन्सान का पूंजी के बल पर शोषण न हो और जहां कोई भी इन्सान शिक्षा, इलाज व रोजी-रोटी से वंचित न रहे। लेकिन इन महान शहीदों का वह सपना आज भी अधूरा है। आजादी के 64 साल बाद भी भयंकर महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अश्लीलता, नशाखोरी, शिक्षा व स्वास्थ्य के निजीकरण-व्यापारीकरण आदि समस्याओं ने लोगों का जीना दूभर कर दिया है जिनकी जड़ मौजूदा शोषणमूलक पूंजीवादी व्यवस्था है। उन्होंने जनजीवन की इन ज्वलन्त समस्याओं को लेकर जोरदार जन आन्दोलन छेड़ने का आह्वान करते हुए कहा कि हर तरह के शोषण-जुल्म को मिटाने के लिए संघर्ष करना ही उन शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

सभा में अध्यापक जवाहरलाल गोयल, डी.वाई.ओ. के संगठक नरेश कुमार, कृषक खेतमजदूर संगठन के जिला सचिव कॉमरेड राजकुमार, मराठा एकता शक्ति के कलीराम मोहना आदि ने भी आजादी आन्दोलन के गौरवशाली इतिहास व शहीद उधम सिंह के जीवन-संघर्ष के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और उनसे सीख लेकर वर्तमान में अपना फर्ज निभाने के लिए आगे आने की अपील की। अध्यक्षीय भाषण के साथ सभा का समापन हुआ।

ढाका में .....

(पृष्ठ 3 का शेष)

मैं एक राजनैतिक पार्टी, सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर (कम्युनिस्ट) से जुड़ा हुआ हूँ। जब समाजवादी खेमा ढह गया था तब अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी जगत में निराशा–हताशा छायी हुई थी और लोग साम्राज्यवादी हमले को लेकर आशंकित थे क्योंकि शांति का गढ़ समझे जाने वाले समाजवादी खेमे का पतन हो चुका था। ऐसे समय हमारी पार्टी के दिवंगत महासचिव कॉमरेड नीहार मुखर्जी ने हमारे युग के महान मार्क्सवादी चिन्तनकार व दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन से मार्गदर्शित होकर सभी प्रगतिशील व जनवादी मनोभावना वाले लोगों को एक व्यापक आधार वाले मंच पर एकजुट कर जुझारू साम्राज्यवाद–विरोधी, युद्ध–विरोधी आन्दोलन चलाने की जरूरत पर बल दिया था जिसकी धुरी कम्युनिस्ट होंगे। उन्होंने विभिन्न देशों में चल रहे इन आन्दोलनों को संयोजित करने की जरूरत पर भी बल दिया था ताकि दुनियाभर में साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलन की जोरदार लहर पैदा की जा सके। हमने साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलनों को संयोजित करने के इस विचार का कष्टसाध्य अनुसरण किया और कई अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में हमने ऐसी एक अंतर्राष्ट्रीय संयोजन कमेटी बनाने का विचार रखा। हालांकि इसे व्यापक समर्थन मिला लेकिन इसे संगठित करने के लिए कोई संगठन आगे नहीं आया। कुछ संगठनों ने सुझाव दिया कि हमने क्योंकि यह विचार दिया था इसलिए हमें ही यह प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए। इस तरह हमारी पहल पर कलकत्ता में 2007 में हुए एक अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद–विरोधी सम्मेलन में इन्टरनेशनल एंटी–इम्पीरियलिस्ट एण्ड पिपल्स सोलिडेरिटी कॉऑर्डिनेटिंग कमेटी (आईएपीएससीसी) का गठन हुआ।

किस तरह भारतीय पूंजीवाद बांग्लादेश के प्राकृतिक संसाधनों व सस्ती श्रम शक्ति के शोषण–दोहन को विस्तारित कर रहा है जो बांग्लादेश के अवाम के लिए गंभीर खतरा पैदा करता जा रहा है, इस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने भारत सरकार के द्वारा बिना किसी से सलाह–मशविरा किये मणिपुर में बहुत बड़ा तिपाईमुख बांध बनाने के कदम की निन्दा की। उन्होंने कहा कि यह बांग्लादेश और भारत के अवाम, दोनों के लिए ही बेहद नुकसानदेह होगा। उन्होंने न केवल बांग्लादेश और भारत बल्कि पूरे क्षेत्र के अवाम से साम्राज्यवाद–विरोधी, पूंजीवाद–विरोधी संघर्ष में एकता व एकजुटता कायम करने का आह्वान करते हुए कहा : ''मैं समझता हूँ कि इस सम्मेलन से जो मुख्य संदेश जाना चाहिए वह यह है कि दूसरी जगहों के संघर्षों से सुर में सुर मिलाते हुए पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ सही क्रान्तिकारी नेतृत्व में इस तरह के व्यापक जन आन्दोलन इस महाद्वीप में भी संगठित किये जाने चाहिएं। केवल इस तरह के कामों को हाथ में लेकर ही हम दुनिया के कोने–कोने के साम्राज्यवाद–विरोधी योद्धाओं के साथ एकजुटता का सही मायने में इजहार कर सकते हैं।''

कॉ. सारा फलाउण्डर्स ने इस बात पर जोर दिया कि पूंजीवाद के वर्तमान भूमण्डलीय संकट ने लोगों के सामने एक जबरदस्त चुनौती पेश कर दी है। इसमें एक तरफ जहां युद्ध, मंदी, बेरोजगारी के गर्त में गिरने का खतरा है, वहीं दूसरी तरफ एक क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए लड़ने का मौका है जिसकी एक बेहतर दुनिया में कदम रखने के लिए बेहद जरूरत है।'' आज पूंजीवाद अपनी मौत के कगार पर है। यह हम सबको और पतन की तरफ खींच सकता है। लेकिन पूंजीवाद इतिहास के रंगमंच से चुपचाप नहीं चला जाएगा। लिबिया पर अमेरिका / नाटो के युद्ध और अफ्रीकी नेता मुअम्मर गद्दाफी की उनके द्वारा की गई नृशंस हत्या ने दिखा दिया है कि अमेरिका साम्राज्यवाद कितना उपद्रवी और बेरहम है।'' लोगों में फूट डालने के लिए इसके द्वारा हर जगह रची जा रही साजिशों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा : ''यह 1%, अंतर्राष्ट्रीय शोषक वर्ग, अमेरिकी साम्राज्यवाद जिन पर हावी है केवल नस्लवाद, धर्म व राष्ट्रीय मूल आधारित दकियानुसीपन, कानूनी हैसियत के बदतरीन रूपों को घुसेड़कर ही अपनी स्थिति को बरकरार रख सकता है। इस जहर से निपटते हुए एकता और एकजुटता कायम करना हमारे लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काम है।''

ट्युनिशिया व मिस्र के आन्दोलन से प्रेरणा पाकर अमेरिका में हुए नये आन्दोलन, वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो आन्दोलन की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने कहा : '' यह तो महज एक शुरूआत ही है। इसमें एक बहुत बड़ी सम्भावना, जबरदस्त उदीयमानता और हमला होने पर लचीलापन दिखाया है लेकिन यह अभी साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलन नहीं है।...हम जानते हैं कि यह जबरदस्त जागरूक संघर्ष कई मंजिलों से होकर गुजरेगा।... जनचेतना जगा दी गई है। लेकिन इस दूषित व्यवस्था को इसके तर्कसंगत अंत तक पहुँचाने के लिए विभिन्न मोर्चों पर कार्यरत दुनिया भर के लोगों के संगठित, सम्मिलित व सतत प्रयास करने की जरूरत पड़ेगी। हमारे सामने बहुत सारे काम हैं। आइये, शुरूआत करें।'' अमेरिकी साम्राज्यवाद का नाश हो का नारा लगाते हुए उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका लिखा हुआ प्लेकार्ड उठाया, उस पर काटा लगाया और उद्घोषित किया : अमेरिकी साम्राज्यवाद मानवता का दुश्मन है।

कॉ. मोहम्मद कासेम ने इस तथ्य की तरफ ध्यान आर्कषित किया कि साम्राज्यवादी ताकतों की बदसलूकी के बावजूद साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलन ने महत्वपूर्ण जीत हासिल की हैं, जैसाकि लेबनान के मामले में देखा गया। उन्होंने कहा : वे सोचते हैं कि हमारा देश छोटा सा है, अगर पश्चिमी साम्राज्यवादी महाशक्तियों की मदद से मध्य–पूर्व में सबसे बड़ी ताकत द्वारा हमला किया जाये तो इसे हराया और काबू किया जा सकता है लेकिन वे मुगालते में हैं। जनसमर्थन से लेबनान इजरायल और अमेरिका के खिलाफ डटा रह सकेगा, और यही वजह है कि जब 2006 में उन्होंने हमारे देश पर हमला किया तो उन्हें लेबनान के हाथों मुंह की खानी पड़ी थी। उन्होंने कहा : मध्य–पूर्व में हम महज इसलिए कीमत चुका रहे हैं – सीरिया कीमत चुका रहा है कि लेबनान व फिलीस्तीनी प्रतिरोध के साथ ईरान व सीरिया अच्छे सम्बन्ध बनाये रख रहा है। वे इस प्रतिरोध को खत्म करने का सपना देख रहे हैं। लेकिन देखिये ट्युनिशिया और मिस्र में क्या हो रहा है। बहरीन में क्या चल रहा है। मैं आपको यह आश्वासन दिलाता हूँ कि देर–सवेर लोग कामयाब होंगे ही। क्या कभी आप कल्पना कर सकते थे कि सऊदी अरब में लोग हरकत में आ रहे हैं और आजादी की मांग करते हुए सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं? लातिनी अमेरिका की तरफ नजर डाल कर देखिये, 15 साल पहले यह कहां था और आज कहां खड़ा है? उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आकार और ताकत के बावजूद, लोगों में अगर दृढ़ संकल्प और एकजुटता रहे तो साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष लाजिमी तौर पर विजयी होगा।

कॉ. अहमद जिब्रील ने यहूदीवादी सामरिक राज्य का अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए और लेबनान में लोगों को निहत्था करने व प्रतिरोध आन्दोलनों को तोड़ने की लगातार चालों और धमकियों सहित उनके मन्सूबों को सिरे चढ़ाने के लिए साम्राज्यवादी जो साधन अपनाते हैं उनको रेखांकित किया – जोर्डन को फिलीस्तीनी शरणार्थियों का वैकल्पिक गृह देश बनाने की चाल, सीरिया के खिलाफ साजिशें, और जो भी देश साम्राज्यवाद और अमेरिकी हेकड़ी के खिलाफ खड़ा हो उसी को फौजी दखलअंदाजी के साथ ही साथ इस दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों को लूटने की धमकी देना। दुनियाभर में जिन विभिन्न देशों में लोग इस हेकड़ी का विरोध कर रहे हैं उनका जिक्र करते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि तमाम प्रगतिशील और राष्ट्रीय मुक्तिकामी ताकतों और आन्दोलनों के साथ फिलीस्तीनी जनता साम्राज्यवादियों और इजरायल के ऐसे हिंसक हमलों का करारा जवाब दे रही है। वहां के लोग शरणार्थियों को वापस आने और इसकी राजधानी जेरूसलम सहित ऐतिहासिक फिलीस्तीन की सरजमीं पर एक स्वाधीन, धर्मनिरपेक्ष व लोकतांत्रिक राज्य कायम करने का सपना पूरा करने के लिए संघर्षरत हैं।

यह गुजारिश करते हुए कि वक्त का तकाजा है ''खासकर यूरोप और अमेरिका के हृदयस्थल में जो यह आर्थिक संकट से सब कुछ चरमरा उठा है इसकी रोशनी में विश्व पूंजीवाद के खिलाफ पहले और जल्दी से कार्रवाई करने के तौर पर ताकतों को लामबंद करें'' उन्होंने कहा कि ''किसानों के फावड़ों, मजदूरों की बाजुओं, स्वतंत्रता सेनानियों के नैतिक बल और पाब्लो नेरुदा की कविताओं से साम्राज्यवाद की महामारी दूर की जा सकती है और साथ ही समाजवाद और लोकतंत्र की दुनिया हासिल की जा सकती है। वामपंथ की लोकतांत्रिक ताकतें जिन्दाबाद, पूंजीवादी शोषण पर चोट करने वाले सभी जुझारू लोगों क्रान्तिकारी अभिवादन।''

बांग्लादेश में तेल–गैस, खनिज संसाधन व बंदरगाह रक्षा के लिए नेशनल कमेटी के संयोजक एस के मुहम्मद शहीदुल्लाह ने भी संक्षेप में अपनी बात रखी।

अंत में कॉमरेड खालेकुज्जामान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आज के समाज में सांस्कृतिक पतन को इंगित किया, क्योंकि मुनाफे के लिए संचालित पूंजीवाद ने हर चीज को बिकाऊ माल में तब्दील कर दिया है और अमानवीयकरण व अपराधों को ले आया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आक्रमण व अन्याय के उदासीनता या मौन आत्मसमर्पण पतित कर रहा है और इन्सान की फितरत के खिलाफ है। इससे रवीन्द्रनाथ जैसे बुर्जुआ मानवतावाद भी नफरत करते थे जिन्होंने अन्याय के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया था। उन्होंने याद दिलाया कि बांग्लादेश में महान मुक्ति–संघर्ष के दौरान जब तमाम अवाम पश्चिमी पाकिस्तानी शासकों के जुल्म–अत्याचारों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ था, उस समय बांग्लादेश के लोगों के द्वारा चोरी, डकैती, बलात्कार और कत्ल का एक भी मामला नहीं हुआ था, बल्कि उल्टे लोग एक–दूसरे की मदद करते थे, एक–दूसरे का ख्याल रखते थे, आज जैसे नहीं थे। यह पाकिस्तानी फौज थी जिसे खून–खराबा किया और ऐसा कोई अपराध नहीं जो उसने नहीं किया हो। लेकिन बंगालियों ने नहीं किया, हर तरह के दमन–उत्पीड़न से मुक्ति के लिए उनके संघर्ष में ऐसी थी उनकी जागरुकता और ऐसे नैतिक मूल्यों से वे लैस थे। लेकिन आज तसवीर बदल गई है जो हमें देखने को मिलती है वह है पूंजीवाद, साम्राज्यवाद की संस्कृति जो और कुछ नहीं, बल्कि उदासीनता, क्रूरता, सांस्कृतिक पतन व अपराध को पनपाती है। उन्होंने उन्नत सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों से लैस करने पर बल दिया जिनके बिना शोषण से मुक्ति, युद्ध, लूट–खसोट व फौजी कब्जे से छुटकारा हासिल करने का संघर्ष कामयाब नहीं हो सकता।

इसके बाद सांस्कृतिक संगठन, चारण सांस्कृतिक केन्द्र ने नाटक व गानों की अपनी सुन्दर रचना प्रस्तुत की जिनमें साम्राज्यवादी हमले के तहत जनजीवन और बांग्लादेश से लेकर फिलीस्तीन तक, पूंजीवाद द्वारा अफ्रीकी गुलामी के प्रतीक के तौर पर नाइजेरिया, इराक और उत्तर कोरिया आदि दुनिया के विभिन्न भागों में उनकी ताकत का जिक्र किया गया था और अंत में समूहगान के जरिये ताकतवर प्रतिवादी आन्दोलन की आवाज बुलन्द की गई थी। इसकी खासकर विदेशी प्रतिनिधियों द्वारा बड़ी सराहना की गई जिनके लिए समस्त प्रस्तुती का अनुवादित पाठ उपलब्ध कराया गया था। प्रतिनिधि अधिवेशन 28 व 29 नवम्बर को हुए।

उद्घाटन प्रतिनिधि अधिवेशन

इसके बाद, प्रतिनिधि अधिवेशनों को दो भागों में बांट दिया गया और वे महानगर नाट्यमंच हाल व शिल्पकला अकादमी हाल में साथ–साथ आयोजित हुए। इन अधिवेशनों के विचारणीय विषय थे : साम्राज्यवाद के आर्थिक व राजनैतिक हमले, साम्राज्यवाद के आर्थिक व सांस्कृतिक हमले, साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण और इसका चौतरफा असर, साम्राज्यवाद के राजनैतिक व सामरिक हमले, दक्षिण–पूर्वी एशिया में साम्राज्यवादी आधिपत्य और शोषण, और विश्व पूंजीवाद–साम्राज्यवाद का संकट व भावी कार्यभार। इन अधिवेशनों की अध्यक्षता क्रमश: कॉमरेड्स सारा फलाउण्डर्स, अलैक्जैण्डर मुबारिस, सुरेश कुमार आलि मगार, इलियाथाम्बी थम्बिया, बिल डोरेस और मोहम्मद ते ने की।

चर्चा–बहस के दौरान कॉ. अलैक्जैण्डर मुबारिस ने लिबिया, सीरिया, ईरान, उत्तर कोरिया, क्यूबा, वेनेजुएला पर हमले के खिलाफ संघर्षों का अभिनन्दन करते हुए जोर देकर कहा : ''साम्राज्यवाद के खिलाफ जिस लड़ाई में वे लगे हुए हैं, वे हमारे लिए भी लड़ते हैं। उनके लिए लड़ना हमारा फर्ज है।'' कॉमरेड लेना ने इस बात पर बल दिया कि साम्राज्यवाद से लड़ने के लिए हमें इसके चरित्र को समझना होगा और ठोस परिस्थिति का विश्लेषण करना होगा। हमें साम्राज्यवाद से उसके अपने हथियारों से नहीं, बल्कि हमारे अपने हथियार से लड़ना है और वह क्रान्तिकारी विचारधारा। कॉमरेड मोयताज अल हेफ्नवी ने मिस्र में संघर्ष की दूसरी लहर का दर्शाते हुए आर्थिक व राजनैतिक अमेरिका–नीत आधिपत्य से मुक्त एक आधुनिक सिविल लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना को उखाड़ फेंकने में साम्राज्यवाद और उसके पिठ्ठुओं की भूमिका की तरफ ध्यान आर्कषित किया। कॉ. एद्देब्बरह अब्दुस्सलाम ने इसकी तरफ ध्यान खींचा कि किस तरह साम्राज्यवाद तबाही मचा रहा है और इसकी बीज व कृषि नीति और पानी के व्यापारीकरण के जरिए देशों को वश में कर रहा है। कॉमरेड नीनू चापागेन ने लोगों को सामूहिक राजनैतिक कार्रवाई से दूर हटाने, उनके संघर्ष को दिग्भ्रमित करने और 'हरेक मानवीय अन्तर्क्रियाकलाप के उपभोक्तावादीकरण को स्वाभाविक बनाने के लिए' जीवन के हर क्षेत्र में साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक, दार्शनिक व आर्थिक हमलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमारा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महुआ में रोष प्रदर्शन

महुआ (बिहार): 3 दिसम्बर को शहीद खुदीराम बोस जयन्ति के अवसर पर 10 सूत्री मांगों के समर्थन में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) व ऑल इण्डिया कृषक खेतमजदूर संगठन की ओर से अनुमंण्लाधिकारी, महुआ के समक्ष रोषपूर्ण प्रदर्शन किया गया। पार्टी कार्यालय फुदेनी चौक से मांगों की तख्तियाँ के साथ सुसज्जित जुलूस निकला जो महुआ बाजार के प्रमुख मांगों से होते हुए नारे लगाते एस.डी.ओ. कार्यालय के समक्ष पहुँच कर सभा में तब्दील हो गया। सभा की अध्यक्षता पार्टी के अंचल सचिव कॉमरेड विश्वनाथ साहू ने की। प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करने वालों में पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. इन्द्रदेव राय, पार्टी नेता रवीन्द्र कुमार, अवधेश, दिनेश राय, सुनैना देवी, मंझा देवी, उमाकान्त कुमार, डॉ. सकलदेव राम इत्यादि प्रमुख थे। वक्ताओं ने कमरतोड़ महँगाई, खाद-बीज की बेतहाशा मूल्यवृद्धि, आम आदमी की पहुँच से दूर होती जा रही शिक्षा-स्वास्थ्य बिजली इत्यादि के सम्बन्ध में केन्द्र व राज्य सरकार की जमकर आलोचना की और केन्द्र व राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ उन्नत नीति-नैतिकता के आधार पर संगठित होकर आन्दोलन तीव्र करने का आह्वान किया। अन्त में पार्टी के जिला सचिव कॉमरेड ललित कुमार घोष के नेतृत्व में कॉमरेड्स रामकुमार राय, उदय साहु, विश्वनाथ साहु, राजकिशोर राय, मिश्रीलाल राम, विनोद महतों को लेकर गठित एक प्रतिनिधिमण्डल ने एसडीओ, महुआ को 10 सूत्री माँगों का एक ज्ञापन सौंपा।

मुरादाबाद (उ.प्र.) में एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध पीतल मजदूर यूनियन के बैनर तले 12 दिसम्बर को डीएम कार्यालय के समक्ष अपनी विभिन्न माँगों के लिए प्रदर्शन करते हुए पीतल मजदूर

ढाका में ....

(पृष्ठ 6 का शेष)

काम है संघर्ष के लिए लोगों को शिक्षित-दीक्षित करना और इससे सीखना। कॉ. एन्टोनियो अर्तुसो ने इस बात पर बल दिया कि हम कम्युनिस्टों और प्रगतिशील लोगों को एक फासीवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी विचारधारा और संस्कृति विकसित करनी होगी और साम्राज्यवाद के खिलाफ लगातार गहन शिक्षा, वैचारिक अभियान और सांस्कृतिक संघर्ष संगठित व विकसित करना होगा। कॉमरेड इलियाथाम्बी थाम्बिया ने दर्शाया कि साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की संस्कृति का मुकाबला करने में वर्तमान में प्रतिरोध की संस्कृति पहले कदम के तौर पर जरूरी है और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देते हुए ऐसा करने के उन्होने तरीके भी सुझाये। कॉमरेड हीथर कोट्टिन ने जोर देकर कहा :''साम्राज्यवादी संस्कृति का एक जबरदस्त मुखपत्र, साम्राज्यवादी मीडिया, चाहे लिबिया पर उनके युद्ध पर चर्चा कर रहा हो या जघन्य बलात्कार पर, जो शिकार हुए हैं हमेशा उन्हीं पर ही हमला करता है। साम्राज्यवादी संस्कृति जन समर्थन और उत्पीड़ितों की हमदर्दी पाने के लिए जिनका वे दमन करते हैं उन्हीं की खिल्ली उड़ाती है।'' कॉ. मुहम्मद कासिम का कहना था : ''तालीबान अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की पैदाइश है और यह साम्राज्यवाद-विरोधी ताकत हरगिज नहीं है। वे सिर्फ अफगानिस्तान में संयुक्त राज्य अमेरिका की मौजूदगी के ही खिलाफ हैं। उन्हें अब अन्य साम्राज्यवादी ताकतों की तरफ से धन मुहैया कराया जा रहा है।'' कॉ. रामसरण लोहमस ने यह मांग की कि अमेरिकी साम्राज्यवादियों के कब्जे में डियागो गार्सिया के साथ चागोस आर्किपेलेगो को मारिशस को वापस बहाल किया जाये और वहां के बाशिन्दों को वापस घर आने दिया जाये। कॉ. खालेद हैद्दाद्दीन ने अमेरिका की अगुआई में साम्राज्यवादियों द्वारा अफगानिस्तान, इराक और लिबिया पर किये गये बर्बर फौजी हमलों और इजरायल-अमेरिका द्वारा संयुक्त रूप से फिलीस्तीन का दमन किये जाने की कड़ी निन्दा की और साम्राज्यवादी हमलों से लड़ने और शांति के लिए सभी साम्राज्यवाद-विरोधी लोगों की एकता की जरूरत पर बल दिया। कॉ. सिमिन रोयनियन ने इस बात पर बल दिया कि साम्राज्यवादी मित्रशक्तियों ने ईरान के लोगों पर बर्बर प्रतिबंध लगा रखे हैं, इसके मौजूदा जोरदार साम्राज्यवाद-विरोधी रुख, प्रगतिशील देशों के साथ इसके अच्छे सम्बन्धों और फिलीस्तीन में प्रतिरोध आन्दोलन को समर्थन की वजह से वे देश को धमकी दे रहे हैं। कॉ. हनी हैद्दाद्दीन ने इंगित किया कि कैसे साम्राज्यवादी अपने मन्सूबों को सिरे चढ़ाने के लिए प्रतिक्रियावादी धार्मिक ताकतों का इस्तेमाल कर रहे हैं और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यहूदीवादी विस्तारवाद और साम्राज्यवादी आक्रमण के इसके प्रतिरोध और फिलीस्तीन के उद्देश्य के प्रति इसके समर्थन के कारण सीरिया को निशाना बनाया जा रहा है। कॉ. मोहम्मद ते ने सीरिया में हुकूमत बदलाव का विरोध करने और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता बढ़ाने की जरूरत को दर्शाते हुए इस क्षेत्र में साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ ताकतवर प्रतिरोध आन्दोलन विकसित करने के तौर तरीकों को रेखांकित किया। कॉ. अहमद अब्दुल रहमान ने सूडान में साम्राज्यवादी गहरी चालों पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर बल दिया कि अमेरिकी आधिपत्यवाद का प्रतिरोध करने की इस देश को सजा दी जा रही है और इसे आतंकवादी के तौर, आतंकवाद फैलाने वाले के तौर पर पेश किया जा रहा है। भारत से के. चौधरी व बांग्लादेश के कई प्रतिनिधियों ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने दुनिया के विभिन्न भागों में साम्राज्यवादी हमलों के विभिन्न पहलुओं पर और भी विस्तार से चर्चा की - साम्राज्यवादियों द्वारा कैसे लोग आर्थिक तौर पर शोषित हैं, राजनैतिक तौर पर दबा कर रखे हुए हैं और सांस्कृतिक तौर पर उत्पीड़ित हैं, और यह कि महिलाएं सबसे बुरी तरह सतायी जा रही हैं। भारतीय शासक वर्ग के साम्राज्यवादी चरित्र और इस क्षेत्र में इसके प्रभुत्ववादी मन्सूबों की तरफ ध्यान खींचा गया। वक्ताओं ने एक व्यापक मंच पर सभी साम्राज्यवाद-विरोधी लोगों को एकजुट करने और साम्राज्यवादी हमलों को परास्त करने और शांति के लिए ठोस कदम उठाने और विभिन्न देशों में इन आन्दोलनों को संयोजित करने की जरूरत पर बल दिया ताकि विश्वव्यापी साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन की जोरदार लहर छेड़ी जा सके जो दुनिया को पूंजीवाद-साम्राज्यवाद की मुसीबत से निजात दिला सके और इस दिशा में ठोस सुझाव पेश किये गये। आशा व्यक्त की गई कि इस पूरे ग्रह से आये क्रान्तिकारियों, रेडिकल व प्रगतिशील लोगों की यह जमायत केवल साम्राज्यवादियों के खिलाफ एक और भी व्यापक व मजबूत अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता पैदा करने में ही नहीं, बल्कि मानवता के हित-उद्देश्य के लिए जन संघर्ष के एक कॉमन दृष्टिकोण, नये रास्ते और कार्ययोजना तैयार करने में भी सफल होगी।

समापन अधिवेशन

29 नवम्बर को हुए संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता कॉमरेड मुबिनुल हैदर चौधरी ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि अगर ढाका में रहने के दौरान प्रतिनिधियों किसी तरह की कोई दिक्कत व परेशानी हुई हो तो उसके लिए मैं माफी चाहता हूँ । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसा हमारी तरफ से किसी संजीदगी की कमी की वजह से नहीं हुआ, बल्कि तजुर्बे की कमी की वजह से हुआ। उन्होंने कहा कि बहुत सारे प्रतिनिधियों ने साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने के लिए एकता की जरूरत पर जोर दिया है। इस सन्दर्भ में किसी एक देश में आन्दोलन संगठित करने के लिए एकता की जरूरत पर जोर देना चाहता हूँ , लेकिन इस एकता में हम राजनैतिक लाइन की अनदेखी नहीं कर सकते हैं : जैसे कि मिसाल के लिए, मुख्य दुश्मन कौन है जिसके खिलाफ आन्दोलन दिशा निर्देशित करना है। इस बिन्दु पर भ्रम-भ्रांति संघर्षरत लोगों में एकता को तोड़ने में ही मदद करेगी। इस सम्मेलन ने सभी प्रगतिशील साम्राज्यवाद-विरोधी लोगों की एकता का आह्वान किया है। इसमें भी यह एकता साम्राज्यवाद-विरोधी मूल राजनैतिक लाइन की अनदेखी नहीं कर सकती है। जैसे मिसाल के लिए, दक्षिण एशिया के सन्दर्भ में भारतीय राज्य के साम्राज्यवादी चरित्र व साम्राज्यवादी खेमे में इसकी हैसियत की अनदेखी करके कोई एकता नहीं की जा सकती। कॉमरेड मोहम्मद कासिम ने भी प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया। कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने सम्मेलन की कार्रवाई का सार संक्षेप रखा और इस बात की तरफ ध्यान खींचा कि सभी वक्ताओं ने लोगों को लामबंद करने की जरूरत पर जोर दिया है। आम राय है कि जो सब ताकतें शिद्दत के साथ साम्राज्यवाद के खिलाफ हैं और अपने-अपने देश व अन्य देशों में साम्राज्यवादी हमलों के प्रतिरोध में भाग लेने की इच्छुक हैं उन्हें उनकी राजनैतिक प्रतिबद्धताओं व धार्मिक विश्वासों के निरपेक्ष एक व्यापक आधार वाले मंच पर एकजुट किया जा सकता है। उन्होंने यह कह कर अपनी बात समाप्त की : मैं समझता हूँ कि अगर हम इस क्षेत्र में जुझारू साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन खड़ा कर सके, जिसके जरिए हम उन सभी आन्दोलनों के साथ एकजुटता का इजहार कर सकते हैं जो पूंजीवादी-साम्राज्यवादी शोषण, दमन और आक्रमण के खिलाफ दुनिया भर में उठ खड़े हुए हैं और उठ खड़े हो रहे हैं।

उत्तर कोरिया पर लिये गये विशेष प्रस्ताव और सम्मेलन द्वारा मंजूर किये गये संशोधनों सहित घोषणापत्र को ढाका घोषणापत्र, 2011 के रूप में सर्वसम्मति से पारित किया गया। सम्मेलन ने आपसी चर्चा के जरिए संशोधनों को शामिल करके और उनको सटीक भाषा देकर ढाका घोषणापत्र को अन्तिम रूप देने के लिए सचिवमण्डल सदस्यों को अधिकृत किया। कॉमरेड कासिम ने सुझाव दिया कि आईएपीएससीसी के अध्यक्ष रामसे क्लार्क और क्योंकि सचिवमण्डल के चार सदस्य गैरहाजिर हैं अत: नई कमेटी गठित करना स्थगित किया जाए और अगर कोई प्रतिनिधि किसी का नाम जोड़ने का सुझाव दे तो उस पर बाकायदा विचार किया जाये, जिसका सम्मेलन द्वारा पूर्णत: अनुमोदन किया गया।

19 मई को, जिस दिन नाटो के सभी सेनाध्यक्षों व विभागाध्यक्षों के साथ-साथ जी-8 के नेताओं, वित्ताध्यक्षों की न्यूयार्क में बैठक होने जा रही है, एक संयुक्त विश्वव्यापी साम्राज्यवाद-विरोधी दिवस मनाने का सुझाव सर्वसम्मति से मान लिया गया। इसी तरह, 6 अगस्त को हिरोसिमा दिवस अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी दिवस के तौर पर मनाने का सुझाव भी मान लिया गया। आईएपीएससीसी के नाम को सरल कर आईएसीसी (इन्टरनेशनल एन्टी-इम्पीरियलिस्ट कॉऑर्डिनेशन कमेटी) कर देने का एक प्रस्ताव भी मंजूर किया गया। कॉमरेड खालेकुज्जामान के समापन भाषण के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

ईरान से लेबर पार्टी (तूफान), होन्डुरास से ओपीएलएन व जन प्रतिरोध के राष्ट्रीय मोर्चे, चिल्ली से चिल्लीयन कम्युनिस्ट पार्टी (प्रोलिटेरिन एक्शन), रूस से ऑल यूनियन कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ बोल्शेविक्स और फिनलैण्ड से कम्युनिस्ट वर्कर्स पार्टी फॉर पीस एंड सोशलिज्म की तरफ से सम्मेलन के लिए एकजुटता संदेश भी आये।

30 नवम्बर को हिन्द-अमेरिकी सम्बन्धों और इस उपमहाद्वीप पर इसके प्रभावों पर एक विशेष अधिवेशन पिपल्स यूनिवर्सिटी सभागार, सावर, ढाका में आयाजित हुआ। इसकी अध्यक्षता का. नीनू चापागेन ने की, बांग्लादेश से बुद्धिजीवियों के अलावा, कॉ. इलियाथाम्बी थाम्बिया, सिमिन रोयनियन और मुहम्मद कासिम ने भी सभा को सम्बोधित किया। हिन्द-बांग्लादेश सम्बन्ध -अतीत, वर्तमान व भविष्य विषय पर दोपहर बाद का सत्र जहांगीरनगर में जहीर रहमान विश्वविद्यालय के सेमिनार सभागार में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता कॉ. ध्रुव मुखर्जी ने की। बांग्लादेश से बुद्धिजीवियों व शिक्षाविदों के अलावा, एसयूसीआई (सी) की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. अमिताभ चटर्जी और आन्ध्र प्रदेश राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड के. श्रीधर ने भी सभा को सम्बोधित किया। ●●

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly
Date of Printing : 5 January, 2012

दिल्ली में स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स

दिल्ली में एमपी क्लब के सभागार में, 17-18-19 दिसम्बर को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी द्वारा एक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स का आयोजन किया गया। स्कूल की शुरूआत इस युग के महान मार्क्सवादी चिन्तनकार व दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण व उन पर रचित गान से हुई।

इसका संचालन पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने किया। उन्होंने मार्क्सवाद, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व पार्टी जीवन के विभिन्न पहलुओं और सही कम्युनिस्ट पार्टी के सांगठनिक नियमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से पार्टी को मजबूत करने का आह्वान किया। दिल्ली के पार्टी कार्यकर्ताओं, समर्थकों व हमदर्दों ने इसमें सक्रिय भाग लिया। स्कूल का समापन अन्तर्राष्टीय गान से हुआ।

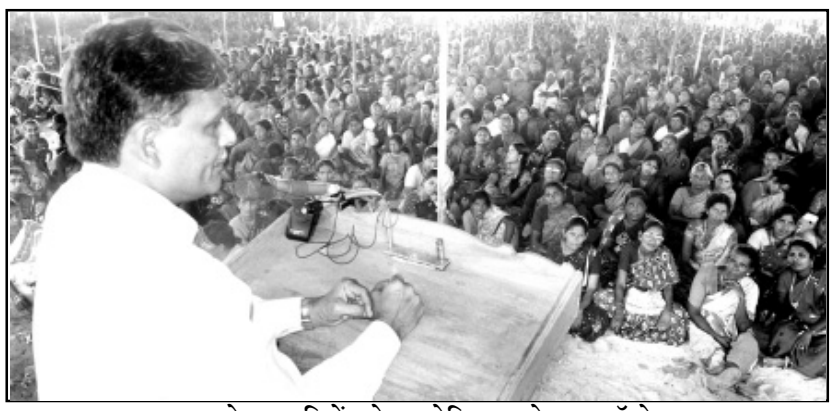

आन्दोलनकारियों को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड तरुण मण्डल

तमिलनाडु के कुडमकुलम में प्रस्तावित परमाणु बिजली प्लांट के खिलाफ 29 दिसम्बर को कन्याकुमारी में पिपल्स अगेंस्ट न्यक्लियर प्रोजैक्ट द्वारा कन्वेन्शन किया गया। कन्वेन्शन में तमिलनाडु व केरल, दोनों राज्यों के लगभग15000 लोग शामिल हुए। इसमें एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के सांसद कॉ. तरुण मण्डल ने भी अपनी बात रखी। इससे पहले इस आन्दोलन के नेता डा. एस.पी. उदयकुमार व अन्य नेताओं ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

उत्तर कोरिया के प्रेसिडेन्ट किम जोंग इल की मृत्यु पर आईएसीसी द्वारा शोक प्रकट

इन्टरनेशनल एंटी-इम्पीरियलिस्ट कॉऑर्डिनेशन कमेटी के महासचिव कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने 19 दिसम्बर को वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया और उत्तर कोरिया की जनता के नाम जारी एक शोक संदेश में कहा,''अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी और मेरी अपनी तरफ से मैं वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया के महासचिव, नेशनल डिफेंस कमिशन के चेयरमैन और कोरियन पिपल्स आर्मी के सुप्रीम कमाण्डर कॉमरेड किम जोंग इल की दुखद और आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। यह सिर्फ उत्तर कोरिया की जनता के लिए ही नहीं बल्कि समग्र तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी आन्दोलन की ही एक क्षति है। समाजवादी खेमे के ढह जाने के बाद साम्यवाद और समाजवाद के आदर्श को बुलन्द रखने और समाजवादी उत्तर कोरिया को अमेरिका-नीत साम्राज्यवादी हमले से बचाने के लिए कॉमरेड किम जोंग इल ने दृढ़ता के साथ लड़ाई लड़ी थी। हमें पक्का यकीन है कि इस गहरे शोक की घड़ी में भी वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया कॉमरेड किम जोंग इल की परम्परा को कायम रखते हुए सुदृढ़ बनी रहेगी और साम्राज्यवादी खेमे के आक्रमण से समाजवाद की रक्षा करेगी। दुनिया के तमाम लोगों के साथ-साथ भारत के मेहनतकश लोग भी उत्तर कोरिया में समाजवाद की रक्षा के लिए उत्तर कोरिया की जनता के महान संघर्ष के साथ हैं।''

फोन कॉल, ई-मेल इन्टरसेप्ट करने का रा को अधिकार देने का एसयूसीआई(सी) द्वारा विरोध

रा को फोन कॉल, ई-मेल, डाटा कम्युनिकेशन आदि इन्टरसेप्ट करने का फिलहाल अधिकार दिये जाने पर गहरी चिन्ता जाहिर करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 20 दिसम्बर को जारी एक बयान में कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के हालिया उस फैसले का कड़ा विरोध किया जिसमें रा को ग्लोबल जासूसी एजेन्सियों के समकक्ष रखने के बहाने इसे फोन काल, ई-मेल, वायस एण्ड डाटा कम्युनिकेशन को इन्टरसेप्ट करने का अधिकार दिया गया है। कॉमरेड घोष ने दृढ़ मत व्यक्त किया कि आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के बहाने उठाया गया सरकार का यह अलोकतांत्रिक कदम लोगों के मौलिक अधिकारों के हनन के खतरे से भरा है। कॉमरेड घोष ने इसलिए सरकार से यह कदम तुरंत वापिस लेने की मांग की।

भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन स्थगित करने के टीम अन्ना के फैसले पर एसयूसीआई(सी) ने हैरानी व निराशा जाहिर की

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 29 दिसम्बर को निम्न बयान जारी किया: लोकसभा द्वारा पारित लोकपाल व लोकायुक्त बिल-2011 में जब वस्तुत: कुछ भी हासिल नहीं हुआ और जब सेंस ऑफ हाउस व प्रधानमंत्री के आश्वासन से सरकार पीछे हट गई है और जब सरकार के संदिग्ध फैसले से हटने के लिए उस पर दबाव बनाना समय का तकाजा था तब आन्दोलन के गति पकड़ने से पहले ही आन्दोलन स्थगित करने का टीम अन्ना द्वारा अचानक लिया गया फैसला जनता की संघर्ष की भावना पर ठण्डा पानी डाल देगा और इससे सरकार की हिम्मत बढ़ाएगा। इसके अलावा, 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस-नीत यूपीए के खिलाफ प्रचार करने का इसका फैसला जनआन्दोलन को संसदीय खेल की अंधी गली तक ही सीमित रख देगा। लोग बखूबी जानतें हैं कि छोटी-बड़ी तमाम बुर्जुआ-पैटी बुर्जुआ पार्टियाँ जो केन्द्र या राज्यों में सत्ता में हैं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भ्रष्टाचार जारी रखने में मददगार हैं। चुनावों में एक पार्टी या गठबंधन को हराकर और उसी तरह की अन्य पार्टी या पार्टियों के समूह को सत्ता हासिल करने में इस प्रकार मददगार होकर भ्रष्टाचार का मुकाबला करना नामुमकिन है। ऐसा कदम लोगों में संसदीय भ्रम पैदा करेगा और इस प्रकार भ्रष्टाचार व जीवन की अन्य समस्याओं के खिलाफ जनसंघर्ष को कमजोर करेगा। इतिहास ने निश्चित रूप से दिखा दिया है कि जनआन्दोलन का कोई विकल्प नहीं है।

हम लोगों का आह्वान करते हैं कि निचले स्तर से खुद को संगठित करते हुए और सही रास्ते का अनुसरण करते हुए अपना संघर्ष और भी जोशो-खरोश के साथ जारी रखें।

प्रधानमंत्री को सौंपे जाने वाले मांगपत्र पर अपने हस्ताक्षर करें

● बेतहाशा बढ़ती महंगाई ● खाद-बीज-कीटनाशकों की मूल्य वृद्धि ● पास-फेल नहीं की प्रथा ● जनवादी अधिकारों के हनन
● सीमाहीन भ्रष्टाचार ● महिलाओं व बच्चों की खरीद-बेच ● महिलाओं पर बढ़ते जुल्म-अत्याचारों के खिलाफ और
● रोजगार का मौलिक अधिकार ● सभी बेरोजगारों व छंटनी किये हुए मजदूर-कर्मचारियों को काम
● फसल के वाजिब दाम और ● सबको मुफ्त इलाज देने की मांग के लिए

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) द्वारा 14 मार्च को संसद पर प्रदर्शन में शामिल हों

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग. नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com